

“गौर कीजियेगा कि आप इस धरती पर एक इंसान की तरह रह रहे हैं। जब से इंसान इस धरती पर रहता आया है, यह भयावह हिंसा दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। बदतर और ज्यादा खतरनाक होती जा रही है। ठीक? मैंने पूछा कि आपकी क्या प्रतिक्रिया है, आपकी क्या जिम्मेदारी है इसके प्रति? उन्होंने कहा—“मैं इससे दूर रहूँगा”। देखिये, आप दूर नहीं हो सकते। जब आप विमान में बैठते हैं, या डाक टिकट खरीदते हैं, या कुछ भी, खाने का सामान वगैरह, तो आप हिंसा की समूची व्यवस्था में योगदान देते हैं। यह स्पष्ट है? यदि यह स्पष्ट है तो आपका इसमें क्या योगदान है?”

-जे. कृष्णमूर्ति



जे. कृष्णमूर्ति परिसंवाद

वर्ष : 10 अंक : 3

मार्च 2016

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, वाराणसी की त्रैमासिक हिंदी पत्रिका
सितंबर, दिसंबर, मार्च एवं जून में प्रकाशित

संपादक : चैतन्य नागर

उप-संपादक : मुकेश

पृष्ठ संख्या

तुलना रोकती है देखने से

5

समझ मुक्ति लाती है

27

वार्षिक शुल्क : रु. 150.00

पांच वर्ष के लिए : रु. 600.00 दस वर्ष के लिए रु. 1000.00

तुलना हिंसा
की ही
अभिव्यक्ति है

तुलना, पुरस्कार के लोभ और दंड के भय के जरिये शिक्षा देने की परंपरा सदियों से चली आ रही है। आध्यात्मिक शिक्षा के क्षेत्र में भी यह प्रचलित रहा है, स्वर्ग के प्रलोभन और नर्क के भय के जरिये, और मुख्यधारा के शिक्षा केन्द्रों में भी यही तरीके खुले आम अपनाए जाते हैं। 'अच्छे अंकों' के स्वर्ग और 'विफलता' के नर्क के आधार पर। 'परिसंवाद' के इस अंक में कृष्णमूर्ति इसी विषय पर बात कर रहे हैं। बातचीत ब्रॉकवुड पार्क स्कूल के चार विद्यार्थियों के साथ है। कृष्णमूर्ति ने अपनी कई वार्ताओं में तुलना की परंपरा का विरोध किया है, क्योंकि उनके अनुसार यह हिंसा की संस्कृति को पोषित करती है। तुलना हिंसा का ही एक हिस्सा है और जब आप एक छात्र की दूसरे छात्र से तुलना करते हैं तो आप अपनी हिंसात्मक प्रवृत्तियों को ही व्यक्त कर रहे होते हैं। साथ ही जिस छात्र की आप तुलना करते हैं, उसे किसी दूसरे से कमतर आंकते हैं, उसके मन को आहत करते हैं, उसके भीतर भी हिंसा के बीज बोते हैं।

यह सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं होता, बल्कि हमारे रोजमर्रा की ज़िन्दगी की भी यही कहानी है। हम जब खुद की

तुलना किसी अन्य के साथ करते हैं तो खुद के भीतर भी नकारात्मक विचारों का अनावश्यक बवंडर खड़ा कर देते हैं और हिंसा के सुलगते अनावश्यक पलों को जीने में समय और ऊर्जा व्यर्थ करते हैं। यह बहुत ही गंभीर विषय है जिसके स्थूल पहलू हैं और सूक्ष्म भी, सतही और गहरे भी। वास्तव में देखा जाए तो सामाजिक परिवर्तन के लिए यह अत्यावश्यक है कि तुलना की संस्कृति को, जो परोक्ष रूप से हिंसा की ही संस्कृति है, खत्म किया जाए, उसके समस्त निहितार्थों को भली भांति समझ बूझ कर। इस संस्कृति ने हमारी चेतना में गहराई तक जड़ें जमाई हुई हैं, और इसलिए इसकी समझ के लिए एक खास किस्म की ऊर्जा की दरकार है जो हमें कहीं बाहर से नहीं मिलेगी। इस संस्कृति पर प्रश्न उठाकर और इसे समझ कर, खुद से सवाल उठाकर ही इसका असली चेहरा देखा जा सकता है। यह इतनी गहराई तक हमारे आम जीवन का हिस्सा बन चुकी है कि इसे नये सिरे से देखने के लिए एक बिलकुल नयी ऊर्जा, उत्कटता और तीव्रता की आवश्यकता है। हिंसा की सूक्ष्म अभिव्यक्तियों को देखना, समझना और उन्हें समाप्त करना आसान होगा। जब वह एक विशाल वृक्ष का रूप ले लेता है, तब उसे खत्म करने की सम्भावना और क्षीण हो जाती है।

इस वर्ष राजघाट में होने वाले अध्ययन शिविर और फाउंडेशन के अन्य केन्द्रों में होने वाली गैदरिंग की सूचनाएं हम आपको समय समय पर देते रहेंगे।

‘परिसंवाद’ के विभिन्न पहलुओं के बारे में आपके सुझाव की हमें हमेशा प्रतीक्षा रहती है।

—संपादक



तुलना शकती
है देवणे से

कृष्णमूर्ति (कृ.) : पिछली बार जब हम मिले थे तो बातचीत का विषय था, दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है उसके साथ हमारा क्या सम्बन्ध है? ठीक? आपको तो मालूम ही है कि दुनिया में क्या चल रहा है—आतंक, दहशतगर्दी। और ऐसे कई लोग भी हैं जो आतंकित हैं; आतंकवाद का मकसद है आतंक पैदा करना। वे हाईजैक करते हैं, मासूम लोगों की—मारे जा रहे लोग किस वर्ग के हैं यह अप्रासंगिक है—हत्या करते हैं। इधर बेरुत में युद्ध छिड़ा हुआ है, और उधर बांग्लादेश में। आप यह सब जानते हैं। और आप यह भी जानते हैं कि दक्षिण अमेरिका में क्या हो रहा है—या नहीं जानते? फॉकलैंड युद्ध। यहाँ कुछ लोग फॉकलैंड का जश्न मना रहे हैं और अर्जेंटीना में इसे लेकर रुदन चल रहा है। और स्टार वॉर्स भी हैं—आपने जरूर सुना होगा उनके बारे में! इनका नतीजा यह होगा कि सारे एटम बम और न्यूट्रॉन बम बेकार साबित हो जायेंगे। मैं इसके विस्तार में नहीं जाऊँगा। यह सब कुछ सिर्फ बौद्धिक स्तर पर नहीं बल्कि वास्तव में देखकर आपका इन बातों के साथ कैसा रिश्ता उभर कर आता है? राष्ट्रीय, आर्थिक, नस्लीय विभाजनों, ब्रसेल्स में जो हुआ, इन सबके

प्रति आपका क्या रुख है, कैसे आप प्रतिक्रिया करते हैं इनके प्रति?
विद्यार्थी (अ) : सर, जब कोई इन बातों के बारे में अखबारों में पढ़ता है, या इनके बारे में सुनता है, तो ऐसा लगता है कि कैसे प्रतिक्रिया करें। मन इस सवाल में अटक-सा जाता है।

कृ. : मैं आपसे पूछ रहा हूँ आप इन सबके प्रति कैसे प्रतिक्रिया करते हैं? आपकी क्या प्रतिक्रिया, क्या भावना होती है? स्वाभाविक रूप से आपका क्या प्रत्युत्तर होता है?

विद्यार्थी (द) : कम से कम कुछ मौकों पर तो मेरी यही प्रतिक्रिया होती है कि मैं सोचने लगता हूँ कि जहाँ तक मुमकिन हो सके मुझे इन चीजों से दूर रहना चाहिए। दूर रहने की कोशिश करनी चाहिए।

कृ. : ठीक है। यदि आप दूर रहना चाहते हैं, तो क्या आप ऐसा कर पाते हैं?

द : मुझे नहीं मालूम।

अ : क्या आपका तात्पर्य है इस कचरे में योगदान न देना?

द : हाँ, मेरा मतलब है कि लोग कहाँ के हैं, इसमें कोई फर्क न करने की कोशिश करता हूँ।

कृ. : यह तो बड़ा आसान है।

द : हां, पर इसके बाद मैं नहीं जानता कि और क्या किया जा सकता है।

कृ. : यह समझा जा चुका है और यह काफी आसान भी है। पर अधिक गहरे स्तर पर, यदि कोई ऐसा स्तर है भी, तो आप इन सबके बारे में क्या महसूस करते हैं? युद्ध, विरोध, आर्थिक विभाजन, महाशक्तियाँ और वे भयावह चीजें जो घट रही हैं—जिनका इन बातों से कोई लेना-देना नहीं, उनका अपहरण किया जा रहा है, उन्हें मारा जा रहा है, उनपर बमबारी की जा रही है। इज़राइल में बसों, बच्चों और स्त्रियों पर बम गिराए जा रहे हैं—आप समझ रहे हैं न? तो आप कैसे प्रतिक्रिया करते हैं...

अ : मैं अक्सर सोचती हूँ, आदमी यह सब क्यों करता है?

कृ. : नहीं। आप ही आदमी हैं, और आप ही स्त्री भी हैं।

अ : हाँ, यह मेरा भी हिस्सा है।

कृ. : इन बातों से आपका क्या सम्बन्ध है? आप मेरे सवाल का जवाब नहीं दे रहे।

विद्यार्थी (ब) : सर, मुझे ऐसा महसूस होता है कि कुछ है जो बिलकुल सही नहीं और मैं खुद से पूछता हूँ...

कृ. : 'बिलकुल सही नहीं' से आपका क्या मतलब है?

ब : सर, मेरा मतलब है, सही नहीं... यह हत्या, यह बमबारी, यह युद्ध जो चल रहा है।

कृ. : जी, और बताएं।

ब : मुझे नहीं लगता यह सही है और फिर भी मैं निश्चित तौर पर नहीं जानता कि मैं इस सम्बन्ध में कुछ कर भी सकता हूँ या नहीं, क्योंकि कोई इसे रोक पा रहा है ऐसा नहीं लगता।

कृ. : क्या आप इसे रोकना चाहते हैं? क्या आप हिंसा करना चाहते हैं?

ब : नहीं सर।

कृ. : ठीक। तब आप एक हिंसक इंसान नहीं : या आप हिंसा को आतंकवाद और हत्या तक ही सीमित रखना चाहते हैं? पर हिंसा इससे कहीं ज्यादा गहरी है—ऐसा नहीं कि किसी इंसान की हत्या सही बात है—पर क्या आप हिंसक महसूस करते हैं? यदि हम सचमुच ईमानदारी से इसका जवाब दे सकें।

अ : यही, पर मैं आपका विरोधाभास देखती हूँ क्योंकि मैं...

कृ. : कैसा विरोधाभास?

अ : एक स्तर पर मैं यह हिंसा नहीं चाहती, पर अपने खुद के जीवन में मैं या कोई और, एक व्यक्ति की हैसियत से इसी के साथ जीते रहना चाहता है।

कृ. : तो क्या आप जिम्मेदारी लेंगे? इस धरती पर रहने वाले एक इंसान की हैसियत से क्या आप जिम्मेदारी लेंगे और कहेंगे, “मैं हिंसक नहीं होऊंगा”, या कभी हिंसा करेंगे, कभी नहीं...

विद्यार्थी (स) : यह अकेली चीज़ है जो हम कर सकते हैं, ऐसा ही लगता है।

कृ. : क्या आप ऐसा करेंगे? यह न कहें, *ऐसा लगता है कि ‘हम बस इतना ही कर सकते हैं’* : बल्कि क्या आप ऐसा करेंगे? क्या आप कहेंगे : “मैं हिंसक नहीं होऊंगा”, और हिंसा क्या है, इस प्रश्न की पड़ताल करेंगे; इससे कैसे मुक्त हुआ जाए वगैरह वगैरह; क्या आप इस यात्रा पर निकल पड़ेंगे? या, बस यही कहेंगे, ‘मैं इसका हिस्सा बनना नहीं चाहता, मैं इससे दूर रहूँगा।’

पर आप दूर रहेंगे कैसे? जब आप वापस अर्जेंटीना जायेंगे तो आप एक विमान में बैठेंगे, टिकट खरीदेंगे, और उसका एक हिस्सा हथियार खरीदने में खर्च होगा, बाकी हिस्सा...वगैरह, वगैरह।

आप दूर नहीं रह पायेंगे।

अ : पर फिर मैं उसी सवाल में फँस जाता हूँ कि मैं दूर रहूँ कैसे?

कृ. : नहीं, मैं आपको बताना चाहता हूँ। मैं यह नहीं कह रहा कि दूर कैसे रहा जाए; यह गलत सवाल है। आप दूर नहीं रह सकते।

अ : पर मैं यह कह रही हूँ कि यह प्रतिक्रिया सबसे पहले होती है। मैं कैसे इससे बचूँ?

द : वह प्रतिक्रिया किये बगैर नहीं रह सकते।

कृ. : नहीं, मैं आपसे कह रहा हूँ, क्या आप जिम्मेदारी लेंगे, पूरी गंभीरता, उत्कटता के साथ और कहेंगे कि चलें हिंसा के प्रश्न की पड़ताल करें और यह सुनिश्चित करें कि मैं हिंसक न रहूँ और मैं किसी हिंसक नेता को न चुनूँ—ठीक? किसी राजनेता को नहीं। पूरी दुनिया में यही हो रहा है। इसलिए मैं पूछ रहा हूँ कि क्या इंसानों के नाते आप अपनी हिंसा को रोकेंगे? और, हिंसा है क्या? मेरे साथ थोड़ा चलें, बातचीत करें। आप किसे हिंसा समझते हैं?

ब : जब आप किसी को आहत करते हैं?

कृ. : या तो सबसे निचले स्तर पर या फिर सबसे ऊँचे स्तर पर शुरू करें। कहीं से भी शुरू करें। आप मुझे पीटते हैं। आप मुझे लूटते हैं। मेरी हत्या करते हैं। आप मेरे साथ इस तरह का हर काम करते हैं—ठीक? यह सब कुछ हिंसा का हिस्सा है, है या नहीं? अब पड़ताल करें, इसकी तहकीकात करें, अन्वेषण करें। चुप न बैठें।

अ : जब मैं आपसे गुस्सा होती हूँ।

कृ. : सही। जब आप गुस्सा होती हैं। अब आगे चलें।

अ : जब मैं आहत होती हूँ ...

कृ. : हाँ। जब आप आहत होना नहीं चाहते सिर्फ तभी नहीं, बल्कि तब भी जब आप दूसरों को आहत करना चाहते हैं। यह मत कहिये...

अ : हाँ। वह इसमें शामिल है।

कृ. : तो फिर और आगे चलें।

स : जब आप खुद को बचाना चाहते हैं।

कृ. : आंशिक रूप से।

स : देश और युद्ध के मामलों में...

द : और ईर्ष्या भी हिंसा प्रतीत होती है।

ब : और प्रतिद्वंद्विता।

कृ. : आप बोलते रहिये, मुझे बताइए—मुझसे पूछें नहीं। आपके हिसाब से हिंसा क्या है? और क्या आप यह जिम्मेदारी लेंगे कि इस धरती पर एक इंसान की हैसियत से आप हिंसक नहीं होंगे? इसका क्या अर्थ है? और अहिंसक होने का क्या तात्पर्य है? ठीक? आप समझ रहे हैं? वे इसी की बात कर रहे हैं। टॉलस्टॉय और गाँधी, और भारत अहिंसा की सीख देता आ रहा है।

अ : पर वह सिर्फ एक सीमित क्षेत्र में अहिंसा है।

कृ. : इसकी पड़ताल करें, यह न कहें, 'ऐसा प्रतीत होता है'। इसकी

जांच करें, पता करें कि आप हिंसक हैं या नहीं। और फिर यह भी पता करें हिंसा क्या है. आपने कहा, 'गुस्सा'। तो आप गुस्सा नहीं होंगे।

द : पर कृष्णजी, क्या आप ऐसा कह सकते हैं?

कृ. : अवश्य।

द : मेरा मतलब है कि यह एक हिंसक वक्तव्य प्रतीत होता है क्योंकि आप उसे नकार रहे हैं जो वास्तव में अस्तित्व में है।

कृ. : पता कीजिए। मैं उस बन्दे की बात समझ रहा हूँ। पर मैं आपसे पूछ रहा हूँ। क्या आप हिंसक न होने का फैसला करेंगे? और इस मकसद से क्या आप हिंसा की पड़ताल करेंगे।

अ : मैं ऐसा कहने से संकोच कर रही हूँ कि मैं हिंसक नहीं होऊँगी।

कृ. : बात यह नहीं। अभी आपने कहा। गौर कीजियेगा कि आप इस धरती पर एक इंसान की तरह रह रहे हैं। जब से इंसान इस धरती पर रहता आया है, यह भयावह हिंसा दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। बदतर और ज्यादा खतरनाक होती जा रही है। ठीक? मैंने पूछा कि आपकी क्या प्रतिक्रिया है, आपकी क्या जिम्मेदारी है इसके प्रति? उन्होंने कहा, "मैं इससे दूर रहूँगा"। देखिये, आप दूर नहीं हो सकते, ठीक? जब आप विमान में बैठते हैं, या डाक टिकट खरीदते हैं, या कुछ भी, खाने का सामान वगैरह, तो आप हिंसा की समूची व्यवस्था में योगदान देते हैं। सही? यह स्पष्ट है? यदि यह स्पष्ट है तो आपका इसमें क्या योगदान है? फिर आपको अवश्य पूछना चाहिए, हिंसा क्या है? ठीक? आप कुछ कर सकते हैं, या नहीं कर सकते, यह कहने से पहले। ठीक? अब यह बताएं कि हिंसा से आपका क्या तात्पर्य है।

स : अक्सर हम हिंसक तभी होते हैं जब हम तेजी से प्रतिक्रिया करते हैं जिसे हम काबू में नहीं रख पाते। हम तुरंत प्रतिक्रिया करते हैं और इसे देख नहीं पाते।

ब : नहीं। भौतिक स्तर पर बिलकुल सरलता के साथ शुरुआत करें, प्रतिक्रिया भौतिक स्तर पर भी होती है—ठीक? शुरू करें। एक तो

भौतिक हिंसा है। है कि नहीं? किसी को मारना, किसी पर बम फेंक देना, किसी को ट्रेन के नीचे फेंक देना, या चालीस हज़ार फीट की ऊंचाई से किसी शहर पर बम फेंक देना। ठीक? ये सभी भौतिक कृत्य हैं, सही? क्या आप इसमें योगदान करना चाहते हैं, या आप कह रहे हैं “नहीं”, मैं ऐसा करना नहीं चाहता, मैं किसी इंसान को मारना नहीं चाहता, किसी भी वजह से फिलहाल मैं किसी हत्या में शरीक होना नहीं चाहता मैंने इस बारे में काफी सोचा है, इसकी पड़ताल की है और भौतिक रूप से मैं हिंसा नहीं करना चाहता। मुझे नहीं पता बाद में मैं क्या करूंगा... मेरा मतलब है अगले वर्ष, पर अभी तक मैं स्पष्ट हूँ। क्या आप ऐसा कहेंगे?

ब : मेरा विचार है हम ऐसा कह सकते हैं।

कृ. : नहीं, कर सकते हैं इतना ही नहीं, क्या आप ऐसा करेंगे?

ब : पर सर, जब गुस्से की बात होती है, तो यह बिल्कुल अलग मामला लगता है।

कृ. : उस अलग वस्तु का सामना करें। हिंसक नहीं होने के बारे में बात करना काफी नहीं।

ठीक? बात करना, सिद्धांत रचना, विचार विमर्श करना—जैसा कि अभी लोग कर रहे हैं। क्या आप एक इंसान होने के नाते किसी को शारीरिक रूप से चोट नहीं पहुँचाएंगे?

स : क्या आप कह रहे हैं कि हर क्षण हमें इसे देखना चाहिए?

कृ. : नहीं, मैं आपसे यह नहीं कह रहा। मेरे कहे को किसी और बात में न बदलें।

अ : हाँ, सर, फिलहाल मैं ऐसा कह सकती हूँ।

कृ. : आप किसी को शारीरिक रूप से चोट नहीं पहुँचाएंगे।

द : आप पर कोई हमला करे तब भी?

कृ. : रुकें, रुकें, यह तो एक काल्पनिक अवस्था है।

द : हां, मैं समझता हूँ।

कृ. : यदि मैं पूरे जीवन अहिंसक रहा हूँ, हो सकता है मैं गलत होऊँ, पर मुझे पता नहीं मैं क्या करूँगा। कोई अगर मुझ पर हमला करे, तो मैं क्या करूँगा मैं नहीं जानता। पर मेरा मस्तिष्क इस बारे में सोच रहा है, और शायद यह उस तरह कार्य करेगा, या नहीं भी कर सकता। ठीक? तो भविष्य को एक ओर कर दें। इस तथ्य से बचने के लिए यह एक चाल भी हो सकती है।

ठीक? तो शारीरिक हिंसा की बात हुई। क्या आप मनोवैज्ञानिक रूप से हिंसक हैं?

अ : जब मैं किसी इम्तेहान में पचास और छात्रों के साथ प्रतिस्पर्धा में लग जाती हूँ, तब मैं...

कृ. : नहीं, नहीं, ऐसे शुरू न करें, सावधानी से चलें। एक-एक कदम; नहीं, मोहतरमा, किसी नतीजे पर तुरंत न पहुँचें।

अ : मैं नतीजे पर नहीं पहुँच रही सर, मैं यह कह रही हूँ कि जब मैंने ऋषि वैली में इम्तेहान दिया, उस वक्त मैं हजारों दूसरे छात्रों के साथ प्रतिद्वंद्विता कर रही थी।

कृ. : तो आपका कहना है कि मनोवैज्ञानिक प्रतिद्वंद्विता भी हिंसा का ही भाग है।

अ : जी, सर।

ब : हाँ।

द : हाँ।

कृ. : वह अनिश्चित-सी है।

स : जी।

कृ. : प्रतिद्वंद्विता। सिर्फ इम्तेहान नहीं बल्कि और किसी भी तरह की प्रतिद्वंद्विता। तो क्या आप प्रतिस्पर्धा में नहीं उतरेंगे? मैं उससे बेहतर हूँ... इस तरह की बातों में।

स : क्या इसका अर्थ है कि इम्तेहान न देना?

कृ. : एक मिनट, हम इस विषय पर आएंगे, पहले इसका तात्पर्य समझें, इसे महसूसें।

प्रतिस्पर्धा न करना...ठीक? क्योंकि वह हिंसा का ही हिस्सा है...
ठीक? क्या आप इससे सहमत हैं? आपने ऐसा कहा है, तो क्या
आप इसे खत्म करेंगे, या इस प्रतिस्पर्धा की प्रकृति को देखेंगे, इसकी
समग्रता, इसकी सम्पूर्णता को?

अ : ठीक है, फिर शुरू करें।

द : इसे अभी देखते हैं।

कृ : चलिए शुरू करें। बचपन से ही जीवन में प्रतिस्पर्धा है, तुम्हारी
माँ कहती है कि तुम अपने भाई से बेहतर हो, ज्यादा खूबसूरत,
तुम्हारा नज़रिया काफी बेहतर है वगैरह वगैरह, तो क्या आप तुलना
करना बंद कर सकते हैं? तुलना में एक तरह की हिंसा है—दो तरह
के पदार्थों के बीच नहीं, इस कपड़े और उस कपड़े के बीच नहीं,
ऊनी पतलून और कॉर्डरॉय की पतलून के बीच की तुलना नहीं
बल्कि और ज्यादा गहरी। यह एक गहरी समस्या है। क्या आप
अपना जीवन किसी भी तुलना के बगैर जी सकते हैं? दो तरह की
कारों के बीच तुलना करना अलग बात है। ठीक?

अ : लेकिन फिर बगैर तुलना के रहने से क्या तात्पर्य है?

कृ : पता करें। मुझसे न पूछें। वह तो सिर्फ एक सिद्धांत होगा।

अ : मैं तो सिर्फ प्रश्न पूछ रही हूँ।

कृ. : शुरू करें।

अ : ऐसा लगता है कि मैं वहीं जा अटकती हूँ।

कृ. : अटके नहीं, वहां से आगे बढ़ें।

अ : मैं सोचती रहती हूँ... अगर तुलना नहीं की तो क्या होगा,
यदि प्रतिस्पर्धा में नहीं उतरी तो क्या होगा, अगर-मगर, यही सब
सोचती रहती हूँ।

कृ. : इसका अर्थ है, यदि मैं यह करता हूँ तो वह मिलेगा।

द : मैं इससे पहले वाले सवाल पर अटक जाता हूँ। मैं प्रतिस्पर्धा से
मुक्त कैसे हो सकता हूँ? ऐसा कैसे हो सकता है कि मैं तुलना ही
न करूँ?

कृ. : जरा ध्यान से! जिस क्षण आप कहते हैं कि यदि आप यह करेंगे, तो मुझे वह मिलेगा, तब आप ईनाम और सजा के आधार पर काम कर रहे होते हैं।

द : हमने बरसों इसी तरह काम किया है।

कृ. : हाँ, महोदय, इसलिए हम इसकी और जाँच पड़ताल करना चाहते हैं। तो क्या आप कहेंगे तुलना को गहराई से समझें, तुलना की सम्पूर्ण गति को समझें, और कहें, मैंने इसे त्याग दिया है, मैं इसे समझता हूँ, और इसलिए मैं ऐसा नहीं करूँगा। ठीक? आप अच्छी तरह जानते हैं कि आग से हाथ जलता है और इसलिए आप उसे नहीं छूते।

अ : पर हम इसे इसी समझ के साथ नहीं देख पाते।

कृ. : यही तो समस्या है।

द : मैं इसे नहीं समझ पा रहा। मैं इस समस्या को पूरी तरह नहीं समझ पा रहा।

कृ. : तो इसे ध्यान से देखें। किसी निष्कर्ष पर न पहुँचें। चलते रहें! आपने कभी इस बारे में सोचा नहीं, इसे देखा नहीं, यही दिक्कत है। तो चलिए शुरू करते हैं। मुझे लगता है हम सभी इस बात पर सहमत हो चुके हैं कि तुलना में एक तरह की हिंसा है। पर आपको तुलना करनी है। सही? दो तरह के कपड़ों के बीच, दो कविताओं के बीच, दो तरह के कालीनों के बीच, ठीक? पुरानी वाशिंग मशीन से बढ़िया मशीन। आपको तुलना करनी तो है। पर मनोवैज्ञानिक स्तर पर क्या आप यह जारी रखेंगे?

अ : मनोवैज्ञानिक तौर पर तुलना करने से क्या तात्पर्य है?

कृ. : इसका अर्थ है कि मैं आपसे बेहतर हूँ।

अ : जब मैं किसी के बारे में किसी नतीजे पर पहुँचती हूँ, तो क्या यह तुलना ही है?

कृ. : नहीं, नहीं। मैं किसी नतीजे की बात नहीं कर रहा। आप देख पा रही हैं कि आप कैसे कार्य करती हैं?

अ : नहीं, मैं पूछ रही हूँ सर।

कृ. : मैं जानता हूँ। मैं आपसे एक सवाल पूछता हूँ और आप उसके उत्तर में एक प्रतिप्रश्न करती हैं।

अ : नहीं, मैं आपसे यह नहीं कह रही कि आप इस सवाल का जवाब दें।

कृ. : मेरे सवाल का जवाब देने से पहले प्रश्न न करें। ठीक? मैं रुखाई नहीं बरत रहा। मनोवैज्ञानिक स्तर से शुरू करके क्या आप पड़ताल करेंगे, देखेंगे कि तुलना की समूची संरचना क्या है। आप क्यों तुलना करते हैं? आप खुद की तुलना इसके साथ, उसके साथ, या पूरे स्कूल के साथ, या अपने भाई के साथ क्यों करते हैं? क्यों?

स : हमें तुलना करना सिखाया गया है।

कृ. : तो आपको तुलना करने के लिए शिक्षित किया जा रहा है।

स : हाँ।

कृ. : इसका मतलब आपकी प्रतिक्रियाएं यांत्रिक हैं, ठीक? एक कम्प्यूटर जैसी जिसे कि प्रोग्राम्ड किया गया है। आप दोहराते हैं। सही?

स : तुलना अपने आप से ही हो जाती है।

कृ. : अवश्य। आप दोहराते हैं। ठीक? क्या आप देख पा रहे हैं कि मस्तिष्क किस तरह यांत्रिक हो जाता है, यांत्रिक हो गया है?

अ : बने-बनाए ढरों को दोहराते हुए।

कृ. : मैं एक ही विषय ले रहा हूँ। एक बार में एक ही चीज़ उठाएँ। आपने मुझसे कहा—आपने कहा कि तुलना एक तरह की हिंसा है। आप सभी सहमत हुए। अब इसे न बदलें। और मैंने कहा कि इस लैंप और उस लैंप के बीच तुलना करना जरूरी है—ठीक? इस कैमरे और उस दूसरे सस्ते कैमरे के बीच।

अ : हाँ, यह जरूरी है।

कृ. : वह जरूरी है। पर मनोवैज्ञानिक तौर पर, अंदरूनी रूप से

आप तुलना क्यों करते हैं? और वह कह रहे हैं, वह कह रही हैं, “ओह, यह तो प्रतिक्रिया है, स्वाभाविक प्रतिक्रिया”। मैंने कहा, क्या यह स्वाभाविक है, या फिर कृत्रिम, संवर्धित? स्वाभाविक का तात्पर्य है, जैसे एक बच्चे का बड़ा होना। वह स्वाभाविक है।

स : तुलना करना ऐसा ही कुछ है जो हमें सिखाया गया है।

कृ. : बच्चे और आप के बीच?

स : नहीं, नहीं, नहीं।

कृ. : आपने सुना ही नहीं।

स : तुलना करना हमें स्कूल और बाकी जगहों पर सिखाया गया है।

कृ. : आपको तुलना के लिए शिक्षित किया गया है, हमने ऐसा ही कहा। इसका अर्थ यह है कि आपके मस्तिष्क को संस्कारित किया गया है, इसे तुलना करने के लिए शिक्षित, प्रशिक्षित किया गया है, ठीक? फिर हमने कहा कि एक कंप्यूटर जिसे कि प्रोग्राम्ड किया गया है, वह यह सब दोहराएगा। वह नयी तरह के दोहराव का आविष्कार भी कर सकता है। आप समझ रहे हैं न? इससे आगे भी दोहराव है। अब आपको भी तुलना करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है।

मैं आपसे बेहतर हूँ, मैं आपसे लम्बा हूँ, मैं आपसे चतुर हूँ, मुझे आपसे बेहतर नौकरी मिल जाएगी वगैरह, ठीक? मनोवैज्ञानिक स्तर पर मैं और भी सूक्ष्म हूँ। दोहराने के लिए हम प्रशिक्षित, शिक्षित और प्रोग्राम्ड हैं। क्या आप इसे रोकेंगे? क्या आप इसकी वास्तविकता को देखेंगे? कैसे आपका मस्तिष्क यंत्रवत् हो गया है, दोहराए जा रहा है, एक ही बात बार बार कहे जा रहा है? “मैं इसे नहीं कर सकता, मुझे यह करना ही चाहिए, मेरे लिए यह बहुत कठिन है, मैं समझ नहीं पा रहा, मुझे इस बारे में कुछ बताएं।”

द : कृष्णजी, ऐसा लगता है कि मेरा मस्तिष्क हर वक्त यही करता रहता है।

कृ. : रुकें, रुकें। मैं जानता हूँ—‘मुझे समझाएं, फिर मैं...’

अ : पर बिलकुल यही हो रहा है सर।

कृ. : मैं जानता हूँ। इसीलिए मैं बार-बार आपसे कह रहा हूँ।

ब : पर क्या हम...

कृ. : रुकें सर। इसे देखें। देखें कि आपका मस्तिष्क कैसे काम कर रहा है।

ब : जी सर। क्या मैं कुछ कह सकता हूँ?

कृ. : बिलकुल। आप जो चाहे कह सकते हैं!

ब : हमने यह कहा कि हमारी शिक्षा ने हमें तुलना करना सिखाया है। हम सहमत हैं कि हमें तुलना करने के लिए शिक्षित किया जाता है।

कृ. : संस्कारबद्ध।

ब : हाँ, पर क्या हम तुलना न करने के लिए खुद को शिक्षित कर सकते हैं?

कृ. : पता करें। मुझसे न पूछें।

ब : सर, ऐसा लगता है कि आप जानते हैं।

कृ. : मैं जान भी सकता हूँ, नहीं भी जान सकता। पर पता करें, सवाल करें, खुद से पूछें। मेरी परवरिश ऐसी हुई है कि मैं तुलना करने लगूँ। मान लीजिये मेरी परवरिश ऐसी हुई हो। हुई नहीं, पर मान लीजिये कि हुई है और मैं किसी ऐसे के साथ खुद की तुलना करूँ जो मुझसे ज्यादा महान, ज्यादा प्रतिष्ठित है। आप समझ रहे हैं न? इसी तरह की बकवास। अब प्रश्न है कि मैं तुलना करता क्यों हूँ? क्यों? आप कहेंगे कि यह प्रगति है, ठीक? यह विकास है।

द : यह भी कृष्णजी, आप पूछ रहे हैं 'क्यों'। इसकी कोई वजह नहीं दिखती। बस यही किया जा रहा है लगातार।

कृ. : मैं जानता हूँ। मैंने कहा भी। मुझे बचपन से कहा जा रहा है कि मैं कैथलिक हूँ, मेरा बपतिस्मा हुआ, वगैरह बातें जो आप जानते हैं। और फिर मैं कहता हूँ। 'मैं कैथलिक हूँ।'

द : जी।

कृ. : मेरे माँ बाप हैं और इसलिए मैं भी हूँ। अब आगे चलें।

द : मेरा मस्तिष्क बस यही जानता है।

कृ. : बिलकुल। अवश्य ही वह इसी तरह काम करता है। इसलिए मैंने कहा कि आप यंत्रवत् काम कर रहे हैं। ठीक? अब आगे बढ़ें।

अ : सर, मैं इसलिए भी तुलना करती हूँ क्योंकि जब मुझे लगता है कि मैं किसी और से बेहतर हूँ तो इसमें मुझे एक तरह का सुख मिलता है।

कृ. : बिलकुल सही। तो आप किसी पुरस्कार की खोज में हैं और वह है सुख, ठीक? अब इसके परिणाम देखिये। यदि मुझे यह नहीं मिलता तो मुझे सजा मिलती है, तो मैं आहत होता हूँ, मैं अवसाद में चला जाता हूँ, ठीक? मैं सोचता हूँ, ओह, मैं इतना क्षुद्र हूँ। अवसाद, गुस्सा, ईर्ष्या—ठीक? यह सब पूरी ज़िन्दगी चलता जाता है। क्या आप इसी तरह जीना चाहते हैं? मैं बस यह कह रहा हूँ कि आप पता करें। यह न कहें, 'मैं इस तरह जीना नहीं चाहता'।

तो आपका कहना है कि तुलना हिंसा के कारकों में से एक है। क्या आप स्वयं के भीतर, खुद से इसकी पड़ताल करेंगे और कहेंगे कि यह मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं तुलना न करूँ? या क्या आप तुलना की सम्पूर्ण गतिविधि को देखेंगे और इसलिए इसे समाप्त कर देंगे? समाप्त कर देंगे नहीं, यह खुद समाप्त होगी। समझ रहे हैं आप? जैसे किसी पाइप के एक सिरे से पानी गिरता है, और जब उसमें पानी की मात्रा ख़त्म हो जाती है तो पानी रुक जाता है। समझ रहे हैं न आप?

ब : क्या इसका अर्थ है सर कि आप तुलना नहीं करते?

कृ. : मैं क्या करता हूँ यह न पूछें। यह आपका मुद्दा नहीं। मैं आपसे कह सकता हूँ—हाँ, मैंने कभी खुद की किसी से साथ तुलना नहीं की है। ऐसा नहीं कि मैं घमंडी हूँ और दंभ के साथ ऐसा कहता हूँ। यह मेरे दिल में ही नहीं आता (कि मैं तुलना करूँ)। इसे स्वीकार इसलिए न करें क्योंकि मैं ऐसा कह रहा हूँ, मैं खुद को धोखा भी दे सकता हूँ। मैंने इसकी बड़ी गहराई से पड़ताल की है और मैं कह

रहा हूँ कि मैंने कभी तुलना नहीं की। दूसरों के लिए इसका कोई अर्थ नहीं। इससे मैं कोई नायक या हीरो नहीं बन जाता (हँसते हुए)।

अ : सर जब मैं कहती हूँ कि तुलना से हिंसा का जन्म होता है, तो मुझे संदेह होता है कि मैं किस हद तक इसे देख पा रही हूँ।

कृ. : बिलकुल। इसलिए अब पता करें कि देखने का क्या अर्थ है।

अ : हाँ।

कृ. : सवाल मैं पूछ रहा हूँ!

अ : एक तरह का बौद्धिक अवलोकन भी होता है, कुछ शब्दों का ढेर, और हम इसे देखते हैं। पर फिर हम उसमें अटक जाते हैं और उससे आगे, उसके पार नहीं जा पाते।

कृ. : क्यों नहीं जा पाते? क्या आपका मस्तिष्क उस तरफ देखने से इनकार कर देता है? क्या यह आलस्य के कारण है? क्या यह ऐसे ही कह देने का एक तरीका है कि चलो, कोई बात नहीं, सभी तो तुलना करते हैं... आप समझ रहे हैं न?

अ : सर, मैं नहीं सोचती कि पिछले 18 वर्षों में जो कुछ हुआ है वह सब मैं छोड़ना चाहती हूँ।

कृ. : ठीक है। उसे रखे रहें।

अ : यही रोक रहा है मुझे...

कृ. : तो फिर इसे रखे रहें और हिंसक बनी रहें। आप दोनों चीजें चाहती हैं।

अ : यही तो विरोधाभास है।

कृ. : मैं जानता हूँ, जानता हूँ। आप सब कुछ चाहते हैं। केक खाना भी चाहते हैं और अपने साथ ले जाना भी चाहते हैं!

स : जी हाँ।

द : क्या आप पता कर सकते हैं कि देखने से क्या तात्पर्य है?

कृ. : आगे चलें। अवलोकन करें, देखें, ठीक है न? इसका अर्थ क्या है...

अ : मैं निश्चित नहीं कि मैं इसे बहुत साफ़ देख पा रही हूँ।

कृ. : आपका मतलब क्या है?

ब : यह हमसे बाहर है सर।

कृ. : क्या आप टेलीविज़न नहीं देखते?

अ : देखता हूँ।

कृ. : क्या आपने अखबारों में अभी हुई हाईजैकिंग के बारे में पढ़ा या देखा नहीं? देखिये वे क्या कर रहे हैं? क्या आप नहीं देखते? अखबारों में देखें, वे इसकी चर्चा कर रहे हैं।

अ : सर, उन्होंने पहले एक सवाल पूछा था। मैं वापस उस पर जाना चाहूँगी। देखने का क्या अर्थ है?

कृ. : मैं आपसे पूछ रहा हूँ।

अ : पर आप लगातार इस शब्द का प्रयोग कर रहे थे और मैं भ्रमित हो रही थी।

कृ. : क्या आपका मतलब है कि आप नहीं देख पा रहीं कि क्या हो रहा है? आप नहीं जानतीं कि क्या हो रहा है?

अ : जानती हूँ।

कृ. : इसका अर्थ है आप समझती हैं। आप समझती हैं कि वहाँ एक वृक्ष है, यहाँ बत्तियाँ हैं।

ये बत्तियाँ, वे वृक्ष, कालीन, कुर्सियाँ—वे उतने ही वास्तविक हैं जैसे कि TWA हाईजैकिंग। ठीक है न? आप देखती हैं, सुनती हैं।

अ : हाँ।

कृ. : सुनने और देखने का वह एक ढंग है। आप इस पर संदेह नहीं कर सकते।

अ : नहीं।

द : नहीं।

कृ. : वह वहाँ बैठे हैं इस पर आप संदेह नहीं कर सकते।

अ : नहीं, बिलकुल नहीं।

कृ. : तो आप देख रहे हैं, सुन रहे हैं और आप जानते हैं कि यह एक तथ्य है—सही? एक तथ्य की तरह, ठीक? क्या आप स्पष्ट हैं?

अ : जी सर।

कृ. : ठीक। क्या आप एक तथ्य की तरह इसे समझते हैं कि तुलना हिंसा का एक कारक है? तथ्य की तरह, एक विचार की तरह नहीं। आप समझ रहे हैं न, सर?

स : हाँ।

कृ. : एक तथ्य के रूप में ही वहाँ बत्तियाँ हैं, कुर्सियाँ हैं, कालीन है, इस कमरे का आकार है। ये सभी तथ्य हैं। आप तुरंत इस छत को नहीं बदल सकते। कल ज़रूर बदल सकते हैं। तो क्या आप इतनी ही स्पष्टता से, वस्तुनिष्ठता के साथ हमारी बातचीत के विषय को देख पाते हैं?

ब : तुलना हिंसा का ही एक भाग है।

कृ. : हाँ।

द : कृष्णजी, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि मैं इसे कैसे देखता हूँ? मैं देखता हूँ कि तुलना...

कृ. : मैं बताता हूँ। आप मुझे बार-बार दोहराते जाने के लिए कह रहे हैं। मुझे इस पर आपत्ति है। मेरा मस्तिष्क कहता है कि आप अभी तक इससे आगे क्यों नहीं बढ़ पा रहे? समझ रहे हैं। आप एक ही सवाल बार-बार पूछे जा रहे हैं।

अ : ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं अटक गयी हूँ।

कृ. : नहीं।

अ : हाँ, सर।

कृ. : आप ऐसा क्यों कहते हैं? आप देखते हैं, सुनते हैं, या कहीं पढ़ते हैं कि विमान अपहरण हो रहे हैं, लोग भुखमरी के शिकार हो रहे हैं, गन्दगी है, खीझ है, इन सब की बेहूदगी... आप समझ रहे

हैं न? यह सब कुछ तथ्यात्मक है। क्या आप इसे भी एक तथ्य के रूप में स्वयं के भीतर देखते हैं कि तुलना हिंसा का ही अंश है? अब मैं इसे दोहराने नहीं जा रहा। मुझे चिढ़ हो रही है। मैं बार-बार इसे दोहराता नहीं रह सकता।

द : मैं देख पा रहा हूँ दूसरे लोग जब तुलना कर रहे होते हैं तो वे हिंसक होते हैं, पर यह देखना बहुत ही मुश्किल है कि मैं खुद हिंसक हो रहा हूँ।

स : लेकिन यदि आप खुद की किसी के साथ तुलना करते हैं और ऐसा सोच सकते हैं कि वह आपसे बेहतर है, तो आपको गुस्सा आएगा, या आप ऐसा कुछ भी करने को तैयार हो जायेंगे जिससे वह उतना अच्छा न रहे, या फिर ऐसा ही कुछ।

कृ. : एक मिनट रुकें। आपकी दिक्कत क्या है? मैं पूछ रहा हूँ— हम एक बहुत ही, बहुत ही आसान सवाल पूछ रहे हैं; आपकी दिक्कत क्या है?

द : मैं सोचता हूँ मेरी दिक्कत यह है कि...

कृ. : रुकें, रुकें। मैं आपको नहीं सुनूंगा। पहले ठहरें और सवाल को सुनें, सवाल का मतलब समझें, फिर पता करें और तब जवाब दें। आप तुरंत जवाब देने में लग जाते हैं।

अ : सर, आपने ही पूछा कि दिक्कत क्या है।

कृ. : हाँ, दिक्कत क्या है? आपको वहाँ घड़ी बिलकुल साफ़ दिख रही है, यह एक तथ्य है, उसमें एक बजने में तेरह मिनट बचे हैं, ठीक? इतनी ही स्पष्टता, निश्चितता और सटीक ढंग से आप यह क्यों नहीं देख पाते कि तुलना करना एक तरह की हिंसा है?

अ : मेरी दिक्कत है कि मुझे 'अगर-मगर' कहने की आदत है। मैं कहती हूँ, यदि मैंने तुलना करना बंद कर दिया है तो फिर मुझे अहिंसक होना चाहिए। यही हो रहा है।

कृ. : क्यों? क्योंकि आपको पुरस्कार चाहिए।

अ : जी हाँ।

कृ. : तब आप बिलकुल सटीक तरीके से अवलोकन नहीं कर पा रहे। मैं चाहता हूँ घड़ी में एक बज कर दस मिनट हों ताकि मैं लंच के लिए जा सकूँ, तो फिर मैं अवलोकन नहीं कर रहा, मैं सुन नहीं रहा।

अ : इसलिए जब मैं कहती हूँ—‘मैं देख रही हूँ’, तो मुझे इसमें संदेह होता है।

कृ. : आप कैसे संदेह कर सकते हैं?

अ : नहीं-नहीं। घड़ी पर नहीं।

कृ. : दोनों के बीच आप फर्क कैसे करते हैं?

द : देखिये कृष्णजी, आपने दोनों के बीच फर्क किया है।

कृ. : देखिये आप सुनते तक नहीं। थोड़ी परेशानी तो उठाइए।

द : मैं यह कहने ही जा रहा था। मिसाल के तौर पर आपने कहा कि हम एक पदार्थ और दूसरे पदार्थ के बीच तुलना कर सकते हैं, पर मनोवैज्ञानिक तौर पर नहीं।

कृ. : मैं कुछ भी नहीं कह रहा। मैंने यह नहीं कहा कि तुलना न करें।

द : नहीं, पर...

कृ. : मुझे किसी स्थिति में डाल कर उस स्थिति पर हमला न करें। मैं आपसे पूछ रहा हूँ, ‘आप जिस स्पष्टता के साथ घड़ी को देख रहे हैं, उसी स्पष्टता के साथ तुलना वगैरह को क्यों नहीं देखते? आप क्यों नहीं देख पाते? आप युवा हैं, आपका मस्तिष्क भी थोड़ा युवा है, और आप पहले से ही इस अवस्था तक आ पहुँचे हैं कि ‘मैं नहीं जानता, मैं नहीं कर सकता, आप मुझे बताएं’। यह तो बूढ़े लोगों का खेल है! पूरी दुनिया में लोग कह रहे हैं कि उन्हें कोई नेता चाहिए—ठीक? आप भी यही चाहते हैं। और मैं कह रहा हूँ कि कृपया मुझे इस अवस्था में न डालें।

अ : नहीं, सर मैं आपसे जवाब नहीं मांग रही।

कृ. : आप मांग रही हैं।

अ : नहीं, नहीं।

कृ. : आप अटक गयी हैं।

अ : मैं अटक गयी हूँ।

कृ. : ठीक है, अटकी रहिये, मुझे संदेह है कि आप वास्तव में अटकी हैं।

अ : आपको शंका है? आपको क्यों इस पर शंका है?

कृ. : क्योंकि आप इसे दोहराए जा रही हैं।

अ : यही तो अटकना है।

कृ. : इसीलिए, मैं नहीं जानता। यह सिर्फ ग्रामाफोन रिकॉर्डिंग ही हो सकती है।

द : मुझे लगता है वह इसे ही अटकना कहती है।

कृ. : क्या आप तब अटकते हैं जब आप भूखे होते हैं? आप उसके लिए भागते हैं! आगे बढ़िए, पता लगाइए कि आप किसी चीज़ को एकदम साफ़-साफ़ क्यों देखते हैं: पर जिस पल आप उस भौतिक तथ्य से हटते या दूर होते हैं तो आप यह महसूस करने लगते हैं, “ओह, मैं नहीं जानता, मैं अटक गया हूँ, मुझे डर लग रहा है”— आप समझे? आप यह खेल खेलते हैं! इसलिए पता लगाइए कि आप क्या कर रहे हैं, आप ऐसा क्यों कर रहे हैं?

अ : मुझे अक्सर पता ही नहीं होता कि जो मैं महसूस कर रही हूँ उस पर भरोसा कर सकती हूँ या नहीं।

कृ. : यह मसला नहीं है। भरोसा न करें। आपको भरोसा क्यों करना चाहिए?

अ : नहीं, इसीलिए यह ‘मैं नहीं जानती’ की स्थिति का अहसास होता है, अनिश्चितता होती है।

कृ. : क्योंकि आप अपने बारे में अनिश्चित हैं।

अ : हाँ।

कृ. : इसलिए पता लगाइए कि आप अनिश्चित क्यों हैं। हाँ, आप सहमत होते हैं, लेकिन आप वहीं ठहर जाते हैं।

द : फिर ऐसा क्यों है कि हम इन चीजों को देखना नहीं चाहते?

कृ. : आप यह सवाल किससे कर रहे हैं?

द : खुद से।

कृ. : पूछिए और जवाब का पता कीजिए। आप देखें कि अठारह साल या बीस साल से आप क्या कर रहे हैं। दूसरों से पूछ रहे हैं कि वे आपको बताएं कि आप क्या करें, ठीक? और इसकी दूसरी अति है; 'मैं नहीं चाहता कि आप मुझे बताएं, मैं जो चाहूँगा वही करूँगा', ठीक? सहमत? यह हिप्पियों के साथ शुरू हुआ था और एक अन्य रूप में अभी तक चल रहा है—'मैं जो करना चाहता हूँ वही करूँगा; आप कौन होते हैं मुझे कुछ कहने वाले? मैं किसी अधिक्रम (हायरार्की) को नहीं मानता'—आप यह सब समझे? मैं एक ही सवाल पूछ रहा हूँ जिसका आपने जवाब नहीं दिया है।

अ : सर, मुझे इसका जवाब देना मुश्किल लग रहा है।

कृ. : नहीं, आपने सवाल सुना तक नहीं है! मुझे यही शंका है, घड़ी देखिए, उसमें एक बजने में छह मिनट हैं। मैं एक ही बात लगभग बीस मिनट से दोहरा रहा हूँ। आपका मस्तिष्क अपनी जगह से हिलने को तैयार ही नहीं है। आप ऐसा नहीं कहते कि ठीक है, मैं पता लगाने जा रहा हूँ कि मैं उसे साफ-साफ क्यों देख रहा हूँ और इस तथ्य को मैं नहीं देख पा रहा हूँ। तथ्य यह है कि तुलना हिंसा का एक कारण है। यह तथ्य है। आप इसे देखते क्यों नहीं, सुनते नहीं, चखते नहीं, महसूस नहीं करते—आप क्यों नहीं करते? आप कहते हैं—'ओह, मैं अटक गया हूँ।' आप अपनी परीक्षा में ऐसा नहीं कहते; जब आपकी एक घंटे से ज्यादा परीक्षा ली जाती है तब आप नहीं कहते, 'क्षमा करें मैं अटक गया हूँ।'

ब : सर, मुझे लगता है एक कारण यह है कि हमें डर लगता है कि यदि हम आगे बढ़े तो क्या होगा।

कृ. : पता लगाइए कि क्या आप भयभीत हैं। क्या होने की सम्भावना है, यह तथ्य नहीं है। तो, आपको ईनाम चाहिए, आप चाहते हैं कोई आपको बताए, आप चाहते हैं कि आपकी पीठ टोंकी जाए, आपको प्रोत्साहित किया जाए, आगे बढ़ो, बढ़ो, बढ़ो। और मैं कहता हूँ क्षमा करें मैं आपको आगे नहीं बढ़ाने वाला।

जे. कृष्णमूर्ति,
ब्रॉकवुड पार्क के चार विद्यार्थियों के साथ बातचीत,
18 जून, 1985
अनुवाद: चैतन्य नागर



समझ मुक्ति लाती है

प्रश्न: क्या आप हमें बताएंगे कि आपके अनुसार वह कौन सा सत्य है जो हमें आज़ाद कर देगा? आपके इस कथन का अर्थ क्या है: “सत्य को ही आपके पास आना होता है; आप उसे खोज नहीं सकते?”

कृष्णमूर्ति : निश्चित ही, यह समझ लेने से कि मिथ्या क्या है, भ्रान्ति क्या है, अज्ञान क्या है, सत्य का प्रादुर्भाव होता है, है कि नहीं? आपको इसे खोजना नहीं पड़ता, क्योंकि खोजने में तो आप विचार के उपकरण का इस्तेमाल कर रहे होते हैं। यदि मैं लोभी, ईर्ष्यालु, पूर्वाग्रहग्रस्त हूँ, और सत्य को खोजने की कोशिश करता हूँ, ज़ाहिर है कि मेरा वह सत्य लोभ, ईर्ष्या, पूर्वाग्रह का परिणाम ही होगा—इसलिए वह सत्य तो नहीं होगा। जो मैं कर सकता हूँ वह इतना ही है कि मैं देखूँ कि मिथ्या क्या है, इसके प्रति सजग, ‘अवेयर’ हो सकूँ कि मैं संस्कारबद्ध हूँ, कि मैं लोभी हूँ, कि मैं ईर्ष्यालु हूँ। मैं यही कर सकता हूँ कि इसके प्रति सजग रहूँ, कुछ चुनकर उसके प्रति सजग नहीं, बल्कि सहज ही। जब मैं इस प्रकार सजग रहता हूँ तभी, लोभ से मुक्त हो जाता हूँ, और सत्य सामने होता है। परंतु यदि हम सत्य

की खोज करते हैं, तो कहने की ज़रूरत नहीं कि परिणाम भी भ्रांति ही होगा। आप कैसे सत्य को खोज सकते हैं? एक ऐसे मन के लिए, जो मिथ्या में, झूठ में फँसा है, सत्य तो एक अज्ञात-अनजानी शै ही होगी—और हम वाकई मिथ्या में फँसे हुए हैं, क्योंकि हम संस्कारों से ग्रस्त हैं, मानसिक तौर पर, तथा शारीरिक तौर पर भी; और संस्कारों में बँधा मन चाहे जो कर ले, उस अपरिमेय को सम्भवतः माप नहीं सकता। ये केवल शब्द ही नहीं हैं। आप इस बात की सच्चाई देख सकते हैं, यदि आप वास्तव में ठीक से सुनने के इच्छुक हों।

कैसे देख सकता हूँ मैं, जब कि मैं संस्कारित, 'कन्डीशन्ड' हूँ विश्वासों के द्वारा, डर के, अपनी राष्ट्रीयता के, अपने पूर्वाग्रहों के द्वारा, और बेशुमार तरीकों से लोभ और ईर्ष्या के द्वारा—कैसे मैं सत्य को देख सकता हूँ? यदि मैं कोई 'सत्य' देखूँ भी, तो ज़ाहिरा तौर पर वह मेरा अपना प्रक्षेपण ही होगा। बात साफ है कि अहं, 'सेल्फ' जिसे खोज लेता है, वह उसकी अपनी ईजाद हुआ करती है, इसलिए असत्य ही होती है। और इस सच को देखना, जो मैंने अभी कहा उसके सच को देखना, यह मुक्ति की प्रक्रिया ही है, है न?—महज़ यह देख पाना, इस बात का एहसास होना कि जो सत्य है, उसे लोभ नहीं खोज सकता, ईर्ष्या नहीं खोज सकती। महज़ इसका अवलोकन करने से, इसे देखने से, मौनपूर्वक इसके प्रति सजग होने से न केवल लोभ से छुटकारा मिलेगा, अपितु जो सत्य है उसकी अनुभूति भी हो सकेगी। तो वे लोग जो सत्य को खोजने की कोशिशों में लगे हैं, स्पष्टतः किसी भ्रम-भ्रांति में उलझ जाएंगे; अतः सत्य को ही आप तक आना होगा, आप इसकी गवेषणा नहीं कर सकते, इसके पीछे नहीं भाग सकते। क्योंकि; आखिरकार वह है क्या जिसे हम सभी चाहा करते हैं? हम चाहते हैं तुष्टि-तृप्ति, हमें राहत-आराम चाहिए, भीतरी सुरक्षा व शांति चाहिए—और यही सब तो है जिसे हम खोज रहे हैं। हम इसे सत्य कह देते हैं, कोई नाम दे देते हैं। अतः जो हम भिन्न-भिन्न रूपों पर, भिन्न-भिन्न स्तरों पर खोज रहे हैं, वह तृप्ति ही है, न कि सत्य। सत्य तो तभी अस्तित्व में आता है, जब तृप्ति की, सुरक्षा की इच्छा का ही अंत हो जाता

है—जो नितांत दुष्कर है, और चूंकि हममें से ज़्यादातर आलसी हैं, लदड़ हैं, हम सत्य खोज लेने का दावा करते हैं, और उसके इर्द-गिर्द संगठन और संस्थाएं बना लिया करते हैं। अतः जो हम कर सकते हैं वह यही है कि हम अपने चावों-रुचियों के प्रति, इच्छाओं तथा गर्व-गुमान के प्रति सजग हों—इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि किस दरजे पर आप उन्हें रख रहे हैं—उस सब के प्रति सजग हों, और उनसे मुक्त हों, अर्थात् इस अहं से, इस 'मैं' से मुक्त हों। तब आपको सत्य को खोजना नहीं पड़ेगा; तब सत्य आप तक आएगा क्योंकि वह भूमि विद्यमान है—एक मन जो खामोश है, शांत है, अपने खुद के उद्वेलनों से अक्षुब्ध है।

ऐसा मन ग्रहण करने में समर्थ होता है। इसे निषेधात्मक रूप से सजग रहना होगा, अक्रिय, 'पैसिव' तौर पर सजग रहना होगा, जो पुनः अत्यधिक दुष्कर है क्योंकि मन कुछ होना चाहता है; इसे परिणाम चाहिए, कोई उपलब्धि चाहिए। और यदि यह एक दिशा में असफल रहा है, तो यह किसी और दिशा में सफलता तलाशता है। उस सफलता को यह सत्य की खोज का नाम दे दिया करता है। जब कि सत्य तो अज्ञात है; इसका अन्वेषण क्षण-प्रतिक्षण किया जाना ज़रूरी है, किसी अमूर्त कल्पना, 'ऐबस्ट्रैक्शन' में नहीं, किसी विलग किये गये कर्म में नहीं, बल्कि हमारे दैनिक अस्तित्व के प्रत्येक क्षण में। मिथ्या को मिथ्या के रूप में, झूठ को झूठ के तौर पर देखना ही सत्य का आरंभ है—हमारी वाणी में जो मिथ्या है, और जो मिथ्या है हमारे संबंधों में, उन छोटी-मोटी क्षुधाओं-कामनाओं में, उन छोटे-मोटे गर्व-गुमानों में, उन बर्बरताओं में जिनमें हम लिप्त रहा करते हैं। उस सब के मिथ्यात्व के यथार्थ को, उसकी सच्चाई को देखना ही, जो सत्य है उसके प्रत्यक्ष बोध की शुरुआत है। पर बात ऐसी है कि हममें से अधिकतर इस तरह सजग होना ही नहीं चाहते। यह थकानेवाला काम लगता है। इसकी बजाय हम किसी भ्रम-भ्रांति में, किसी आस्था-विश्वास में पलायन करने को तरजीह देंगे, जिनमें हमें अलगाव और ढाढ़स हासिल हो सकते हैं—यह अपेक्षाकृत काफी आसान होता है, और उस अलगाव में हम कहते हैं कि हम सत्य की खोज कर रहे हैं। किसी अलगाव में, अपने आप

को पृथक् कर लेने में, सत्य को खोजना-पाना संभव नहीं है। मानसिक तौर पर सुरक्षित, सुनिश्चित होने की अवस्था में सत्य की उस अगाध अनिश्चितता का प्रकट होना संभव ही नहीं। अतः, यदि हम वास्तव में संजीदा हैं, सच्चे मन से इसमें दिलचस्पी रखते हैं, तो जो कुछ हम कर सकते हैं वह इतना ही है कि हम वस्तुओं से, लोगों से, धारणाओं-विचारों से अपने संबंध को समझने के माध्यम से, सत्य को वजूद में आने का मौका दें। तब, समझ मुक्ति लाती है, और उस मुक्ति में, उस स्वतंत्रता में ही उस वास्तविकता, उस यथार्थ का वजूद हो सकता है।

कलेक्टेड वर्क्स, खंड 5
लंदन, 16 अक्टूबर, 1949
अनुवाद: ओमप्रकाश अरोड़ा



कॉपीराइट सूचना

जे. कृष्णमूर्ति के उद्धरण अंतर्राष्ट्रीय कॉपीराइट नियम के अंतर्गत संरक्षित हैं तथा सर्वाधिकारी की लिखित पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में पुनः प्रस्तुत नहीं किये जा सकते हैं। सन् 1968 के पूर्व की कृष्णमूर्ति की रचनाओं का कॉपीराइट कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ऑफ अमेरिका, ओहायो, कैलीफोर्निया का है। सन् 1968 के बाद की रचनाओं का कॉपीराइट कृष्णमूर्ति फाउंडेशन ट्रस्ट, ब्रॉकवुड पार्क, इंग्लैंड का है।

ऋषिवैली में के.एफ.आई. गैदरिंग 2016

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया का वार्षिक सम्मेलन इस साल ऋषिवैली स्कूल, में 20 से 23 नवंबर के बीच आयोजित होगा। सहभागी 19 नवंबर को ऋषिवैली स्कूल पहुंच सकते हैं। गैदरिंग का समापन 23 नवंबर को दोपहर भोजन से पहले हो जाएगा। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

Rishi Valley Education Centre

Chittoor District, Andhra Pradesh - 517352

Tel : 91-8571-280044/280086/280582/280622

Email : office@rishivalley.org

राजघाट स्टडी सेंटर में आयोजित स्टडी रिट्रीट: 2016–2017 :

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट, वाराणसी में वर्ष 2016–2017 में आयोजित होने वाले स्टडी रिट्रीट का कार्यक्रम इस प्रकार है :

सितंबर 5 – 9, 2016

स्टडी रिट्रीट की थीम है “The First Step Is the Last Step”

नवंबर 1–4, 2016

हिंदी शिविर, विषय है “हिंसा के माहौल में हमारी ज़िम्मेदारी”

फरवरी 5–9, 2017

स्टडी रिट्रीट की थीम है “Understanding Fear and Pleasure”

अप्रैल 9–13, 2017

स्टडी रिट्रीट की थीम है “Aawreness in daily living”

रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क करें:

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221001

ईमेल: kcentrevns@gmail.com फोन: 0542–2441289

कृष्णमूर्ति वीडियो हिंदी सबटाइटल्स के साथ :

- Washington DC 1985 Talk 1 एवं Talk 2.
- Love and Freedom: Turning Point Series Talk 6
- Krishnamurti with Rishi Valley Students 1984 Talk 3
- Why there is such a chaos in the world? Saanen 198

इन्हें मंगवाने के लिए संपर्क करें:

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221001,

ईमेल: kcentrevns@gmail.com फोन: 0542–2441289

हिंदी में उपलब्ध जे. कृष्णमूर्ति की कुछ पुस्तकें

ज्ञात से मुक्ति
प्रथम और अंतिम मुक्ति
हिंसा से परे
आमूल क्रांति की आवश्यकता
अंतिम वार्ताएं
शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य
स्कूलों के नाम पत्र
सुखी वही जो कुछ भी नहीं
ईश्वर क्या है?
आपको अपने जीवन में क्या करना है?
ध्यान
जीवन और मृत्यु
ये रिश्ते क्या हैं?
शिक्षा क्या है?
सोच क्या है?
आज़ादी की खोज
प्रेम क्या है? अकेलापन क्या है?
सत्य और यथार्थ
मन क्या है?

जे. कृष्णमूर्ति परिसंवाद (हिंदी त्रैमासिक पत्रिका)
स्वयं से संवाद (निःशुल्क हिंदी न्यूजलैटर)

विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें :

द कृष्णमूर्ति सेंटर
कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया
राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001
ईमेल : kcentrevns@gmail.com
फोन : 0542-2441289

www.j-krishnamurti.org www.jkrishnamurtionline.org
www.kfionline.org www.jkrishnamurti.org

'कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया' के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. पी. कृष्णा द्वारा सत्तनाम प्रिंटिंग प्रेस, एस-1/208 के-1, नयी बस्ती, पांडेयपुर, वाराणसी 221 002 से मुद्रित एवं कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001 (उ.प्र.) से प्रकाशित।
संपादक : चैतन्य नागर